वच्चों में पढ़ने की आदत का विकास

डिजिटल युग में पुस्तकों और समाचार-पत्रों का महत्व

आज का युग विज्ञान और तकनीक का युग है। इंटरनेट, मोबाइल और डिजिटल माध्यमों ने हमारे जीवन को पहले की अपेक्षा अधिक सुविधाजनक बना दिया है। शिक्षा के क्षेत्र में भी इनका महत्वपूर्ण योगदान है। बच्चे आज मोबाइल और इंटरनेट के माध्यम से कुछ ही क्षणों में देश-दुनिया की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। ऑनलाइन शिक्षा, डिजिटल पुस्तकें और शैक्षणिक वीडियो ने सीखने के नए अवसर प्रदान किए हैं। लेकिन इस बदलती जीवनशैली के बीच एक महत्वपूर्ण प्रश्न हमारे सामने खड़ा है—क्या बच्चे पढ़ने की वास्तविक आदत विकसित कर पा रहे हैं?

आज अनेक बच्चे पुस्तकों और समाचार-पत्रों की अपेक्षा मोबाइल स्क्रीन पर अधिक समय बिताते हैं। मनोरंजन के छोटे-छोटे वीडियो, गेम और सोशल मीडिया की निरंतर उपलब्धता ने बच्चों की दिनचर्या और पढ़ने की रुचि को प्रभावित किया है। पढ़ना केवल अक्षरों और शब्दों को समझना नहीं है, बल्कि यह विचार करने, कल्पना करने, तर्क करने, धैर्य रखने और जीवन को व्यापक दृष्टिकोण से देखने की क्षमता विकसित करने की प्रक्रिया भी है। इसलिए बच्चों में बचपन से ही पुस्तकें पढ़ने की रुचि विकसित करना माता-पिता और शिक्षकों दोनों की महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी है।

1. मोबाइल और इंटरनेट के अत्यधिक प्रयोग से बच्चों पर पड़ने वाले प्रभाव

तकनीक स्वयं हानिकारक नहीं है, लेकिन उसका अनियंत्रित और अत्यधिक उपयोग बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास को प्रभावित कर सकता है। विशेष रूप से बचपन में मस्तिष्क का विकास तेजी से होता है। इस अवस्था में बच्चों को शारीरिक गतिविधियों, पारिवारिक संवाद, खेलकूद, रचनात्मक कार्यों और पुस्तकों के साथ पर्याप्त समय बिताने की आवश्यकता होती है।

अत्यधिक स्क्रीन टाइम से निम्नलिखित समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं या उनका जोखिम बढ़ सकता है—

1. एकाग्रता और धैर्य में कमी- मोबाइल पर लगातार बदलते दृश्य, छोटे वीडियो और त्वरित मनोरंजन की आदत बच्चों को तुरंत परिणाम पाने का अभ्यस्त बना सकती है। इससे लंबे समय तक किसी पुस्तक को पढ़ने, किसी विषय पर विचार करने और कठिन प्रश्नों को धैर्यपूर्वक हल करने में कठिनाई हो सकती है। हालांकि, प्रत्येक बच्चे पर इसका प्रभाव समान नहीं होता।

2. आँखों पर दुष्प्रभाव- लंबे समय तक स्क्रीन देखने से आँखों में थकान, सूखापन, जलन, सिरदर्द और कुछ समय के लिए धुंधला दिखाई देने जैसी समस्याएँ हो सकती हैं। लगातार नजदीक से स्क्रीन देखने और घर के अंदर अधिक समय बिताने का संबंध बच्चों में निकट दृष्टिदोष (Myopia) के बढ़ते जोखिम से भी पाया गया है।

3. नींद में बाधा- रात में सोने से पहले मोबाइल का प्रयोग नींद आने में देरी और नींद की गुणवत्ता में कमी से जुड़ा हो सकता है। पर्याप्त नींद न मिलने से अगले दिन बच्चों की सीखने की क्षमता, स्मरणशक्ति और एकाग्रता प्रभावित हो सकती है।

4. शारीरिक निष्क्रियता- मोबाइल पर अधिक समय बिताने के कारण बच्चों का बाहरी खेलकूद और शारीरिक गतिविधियों में समय कम हो सकता है। इससे मोटापा, शारीरिक फिटनेस में कमी और गर्दन, कंधे तथा पीठ में दर्द जैसी परेशानियों का जोखिम बढ़ सकता है।

5. सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन- यदि बच्चा अपना अधिकांश खाली समय मोबाइल पर बिताता है, तो परिवार के सदस्यों, मित्रों और अन्य बच्चों के साथ प्रत्यक्ष संवाद के अवसर कम हो सकते हैं। इससे सामाजिक सहभागिता और भावनात्मक संवाद के विकास पर असर पड़ सकता है।

6. धैर्य और रचनात्मकता पर प्रभाव- लगातार तैयार मनोरंजन और तुरंत मिलने वाली जानकारी के कारण बच्चों को स्वयं कल्पना करने, कहानी के पात्रों के बारे में सोचने, प्रश्न पूछने और किसी विषय को गहराई से समझने के अवसर कम मिल सकते हैं।

यहाँ वैज्ञानिक दृष्टि से एक बात समझना आवश्यक है कि मोबाइल के प्रयोग से सीधे नसें कमजोर हो जाती हैं या बच्चा अंधा हो जाता है, ऐसा प्रमाणित निष्कर्ष नहीं है। इसी प्रकार सामान्य स्क्रीन उपयोग से स्थायी अंधापन होने का प्रमाण भी नहीं है। फिर भी आँखों की थकान, दृष्टि संबंधी समस्याओं के जोखिम, नींद और व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभावों को गंभीरता से लेना चाहिए।

2. बच्चों में पढ़ने की आदत विकसित करना क्यों आवश्यक है?

पढ़ना केवल परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह व्यक्तित्व निर्माण की एक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है। नियमित रूप से पढ़ने वाले बच्चों में भाषा की समझ, शब्द-भंडार, अभिव्यक्ति, कल्पनाशक्ति और तार्किक चिंतन विकसित करने के अवसर बढ़ते हैं। जब बच्चा कोई कहानी पढ़ता है, तो वह उसके पात्रों, घटनाओं और परिस्थितियों की कल्पना करता है। जब वह समाचार-पत्र पढ़ता है, तो उसे समाज, राजनीति, विज्ञान, पर्यावरण, खेल और देश-दुनिया में हो रही घटनाओं की जानकारी मिलती है। इससे उसका सामान्य ज्ञान बढ़ता है और वह अपने आसपास की दुनिया को समझने लगता है। अध्ययनों में आनंद के लिए पढ़ने और बच्चों की भाषा, शैक्षणिक उपलब्धि, एकाग्रता तथा भावनात्मक विकास के बीच सकारात्मक संबंध पाया गया है।



3. माता-पिता बच्चों में पढ़ने की रुचि कैसे विकसित करें?

बच्चों में पढ़ने की आदत एक दिन में विकसित नहीं होती। इसके लिए माता-पिता को धैर्य, निरंतरता और अपने व्यवहार से उदाहरण प्रस्तुत करने की आवश्यकता है।

(क) घर में पढ़ने का वातावरण बनाएँ

घर में पुस्तकों, बाल-पत्रिकाओं और समाचार-पत्रों के लिए एक छोटा-सा पुस्तक कोना बनाएँ। बच्चों की पहुँच में उनकी आयु और रुचि के अनुसार पुस्तकें रखें। जब बच्चा अपने आसपास बड़ों को पढ़ते हुए देखेगा, तो उसके मन में भी पढ़ने की स्वाभाविक जिज्ञासा पैदा होगी।

(ख) स्वयं पढ़कर उदाहरण प्रस्तुत करें

माता-पिता बच्चों को केवल पढ़ने की सलाह न दें, बल्कि स्वयं भी नियमित रूप से पुस्तकें और समाचार-पत्र पढ़ें। बच्चों पर किसी आदत को थोपने की अपेक्षा अपने व्यवहार से प्रेरित करना अधिक प्रभावशाली होता है।

(ग) प्रतिदिन पढ़ने के लिए समय निर्धारित करें

प्रतिदिन 15 से 20 मिनट का पारिवारिक पठन समय निर्धारित किया जा सकता है। इस दौरान परिवार के सभी सदस्य मोबाइल और टेलीविजन से दूर रहकर अपनी-अपनी पुस्तकें पढ़ें। धीरे-धीरे इस समय को बच्चों की रुचि और क्षमता के अनुसार बढ़ाया जा सकता है।

(घ) विभिन्न भाषाओं के समाचार-पत्र पढ़ने के लिए प्रेरित करें

भारत भाषाई और सांस्कृतिक विविधता वाला देश है। इसलिए बच्चों को केवल एक भाषा तक सीमित न रखें। हिंदी, अंग्रेजी, असमिया तथा अपनी मातृभाषा के समाचार-पत्रों और बाल-पत्रिकाओं से परिचित कराएँ। उन्हें अलग-अलग भाषाओं में प्रकाशित एक ही समाचार पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें। इससे वे भाषा के शब्दों, अभिव्यक्ति और विचार प्रस्तुत करने के अलग-अलग तरीकों को समझ सकेंगे। यह अभ्यास अनुवाद की प्रारंभिक समझ विकसित करने में भी सहायक हो सकता है।

(ङ) समाचार-पत्र को बातचीत का माध्यम बनाएँ

बच्चों से प्रतिदिन पूछें कि आज उन्होंने समाचार-पत्र में क्या नया पढ़ा? कौन-सी खबर उन्हें अच्छी लगी? किसी घटना के पीछे क्या कारण हो सकता है? यदि उन्हें कोई बात समझ में नहीं आती, तो माता-पिता सरल भाषा में उसका अर्थ समझाएँ। इससे उनमें प्रश्न पूछने और स्वतंत्र रूप से सोचने की आदत विकसित होगी।

(च) बच्चों की रुचि के अनुसार पुस्तकें चुनें

छोटे बच्चों को चित्रों वाली कहानियाँ, कविताएँ और लोककथाएँ दें। बड़े बच्चों को विज्ञान, इतिहास, जीवनी, यात्रा-वृत्तांत, पर्यावरण और साहित्य से संबंधित पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित करें। प्रारंभ में उनकी पसंद का सम्मान करना आवश्यक है।

(छ) पुस्तकालय और पुस्तक मेलों से परिचित कराएँ

बच्चों को सार्वजनिक पुस्तकालयों, विद्यालय के पुस्तकालयों और पुस्तक मेलों में ले जाएँ। उन्हें अपनी पसंद की पुस्तक चुनने की स्वतंत्रता दें। पुस्तक चुनने और पढ़ने की प्रक्रिया को आनंददायक बनाएँ, न कि अतिरिक्त गृहकार्य।

(ज) पढ़ी हुई सामग्री पर चर्चा और लेखन कराएँ

बच्चों से कहानी का सार अपने शब्दों में बताने, पसंदीदा पात्र के बारे में लिखने अथवा किसी समाचार पर अपनी राय व्यक्त करने के लिए कहें। इससे पठन के साथ-साथ लेखन और मौखिक अभिव्यक्ति की क्षमता भी विकसित होगी।

(झ) पढ़ने को प्रतियोगिता नहीं, आनंद बनाएँ

बच्चों को कितनी पुस्तकें पढ़ीं, इसके आधार पर दूसरों से प्रतिस्पर्धा करने के लिए बाध्य न करें। उनकी छोटी-छोटी उपलब्धियों की प्रशंसा करें। पढ़ने की आदत का उद्देश्य ज्ञान और आनंद प्राप्त करना होना चाहिए, न कि केवल पुरस्कार या अंक।

4. पुस्तकों और समाचार-पत्रों को मोबाइल का सकारात्मक विकल्प बनाएँ

आज बच्चों को मोबाइल से पूरी तरह दूर रखना व्यावहारिक नहीं है, क्योंकि डिजिटल तकनीक शिक्षा का भी महत्वपूर्ण साधन बन चुकी है। आवश्यकता इस बात की है कि बच्चों को तकनीक का विवेकपूर्ण उपयोग करना सिखाया जाए।

माता-पिता निम्नलिखित उपाय अपना सकते हैं—

1. भोजन करते समय और परिवार के साथ बैठकर बातचीत करते समय मोबाइल का प्रयोग न करें।

2. सोने से कम-से-कम एक घंटा पहले मोबाइल और अन्य स्क्रीन बंद करने की आदत विकसित करें।

3. मनोरंजन के लिए मोबाइल पर निर्भर रहने के बजाय बच्चों को कहानी सुनाना, चित्र बनाना, संगीत, नृत्य, खेलकूद और पुस्तकें पढ़ने के अवसर दें।

4. बच्चों को प्रतिदिन कुछ समय खुले वातावरण में खेलने और प्रकृति के बीच बिताने के लिए प्रेरित करें।

5. मोबाइल का प्रयोग शैक्षणिक उद्देश्य से सीमित और अभिभावकों की निगरानी में कराएँ।

6. स्क्रीन के लगातार प्रयोग के दौरान 20-20-20 नियम अपनाएँ। अर्थात प्रत्येक 20 मिनट बाद 20 सेकंड के लिए लगभग 20 फीट (6 मीटर) दूर किसी वस्तु को देखें।

7. बच्चों की आँखों की नियमित जाँच कराएँ। यदि लगातार सिरदर्द, आँखों में परेशानी या धुंधला दिखाई देने की शिकायत हो, तो नेत्र विशेषज्ञ से परामर्श लें।

इन उपायों से बच्चों के डिजिटल जीवन और वास्तविक जीवन के बीच संतुलन स्थापित किया जा सकता है।

5. विद्यालय और माता-पिता की संयुक्त जिम्मेदारी

बच्चों में पढ़ने की आदत विकसित करने में विद्यालय की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। विद्यालयों में नियमित पठन-अवधि, पुस्तक चर्चा, समाचार-पत्र वाचन, कहानी लेखन और पुस्तक समीक्षा जैसी गतिविधियाँ आयोजित की जानी चाहिए। साप्ताह में एक दिन ऐसा निर्धारित किया जा सकता है, जब बच्चे अपनी पसंद की कोई पुस्तक या समाचार-पत्र का लेख पढ़कर कक्षा में उसके बारे में बताएँ। विद्यालयों में विभिन्न भारतीय भाषाओं की पुस्तकों का संग्रह भी होना चाहिए, ताकि बच्चे देश की भाषाई और सांस्कृतिक विविधता से परिचित हो सकें। माता-पिता और शिक्षक मिलकर बच्चों के लिए ऐसा वातावरण तैयार करें, जहाँ पढ़ना किसी दंड या बाध्यता का विषय न होकर आनंद और आत्मविकास का माध्यम बने।

निष्कर्ष

बचपन में विकसित की गई आदतें जीवनभर व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित करती हैं। यदि हम चाहते हैं कि आने वाली पीढ़ी धैर्यवान, संवेदनशील, तार्किक, रचनात्मक और ज्ञानवान बने, तो हमें उसके हाथों में केवल मोबाइल नहीं, बल्कि पुस्तकें भी देनी होंगी। हमें यह समझना होगा कि इंटरनेट बच्चों को सूचनाएँ दे सकता है, लेकिन उन सूचनाओं को समझने, उनका विश्लेषण करने और उनसे अपने विचार निर्मित करने की क्षमता विकसित करने में नियमित पठन की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। समाचार-पत्र बच्चों को समाज से जोड़ते हैं, पुस्तकें उन्हें कल्पना की दुनिया में ले जाती हैं और साहित्य उन्हें मानवीय संवेदनाओं से परिचित कराता है। माता-पिता को बच्चों को केवल पढ़ाई में अच्छे अंक लाने के लिए प्रेरित नहीं करना चाहिए, बल्कि उन्हें एक अच्छा पाठक, विचारशील नागरिक और संवेदनशील मनुष्य बनाने का प्रयास करना चाहिए। आइए, हम अपने घरों में एक छोटी-सी शुरुआत करें—प्रतिदिन कुछ समय पुस्तकों और समाचार-पत्रों के साथ बिताएँ और बच्चों को भी इस यात्रा का सहभागी बनाएँ। क्योंकि जिस बच्चे की मित्रता पुस्तकों से हो जाती है, उसके लिए ज्ञान की दुनिया के द्वार जीवनभर खुले रहते हैं।

मंजूरी डेका
शिक्षिका, शिक्षा विभाग,
असम सरकार

यह कहां आ गए हम.....

इसमें कोई दो मत नहीं कि परतंत्रता के दौर में व्यापक जनहित के प्रति समर्पित विचारधारा निस्वार्थ भाव से राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा जागृत करती थी। नीति और सिद्धांतों पर आधारित राजनीति का ताना-बाना नागरिकों को पराधीनता के दौर से मुक्ति दिलाने का था। स्वतंत्रता पश्चात प्रारंभिक दो-तीन दशकों तक तो व्यापक जनहित के प्रति समर्पित विचारधारा के साथ राजनीति की जाती रही।



सेवा और समर्पण का भाव राजनीतिज्ञों के चरित्र में शुमार होता देखा गया। राजनीतिज्ञों द्वारा उस दौर में उच्चस्तरीय आदर्शों को आत्मसात किया जाता रहा था। लेकिन इसके पश्चात राजनीतिज्ञों की महत्वाकांक्षा निरंतर परवान चढ़ने लगी। व्यक्तिवादी विचारधारा के आधार पर राजनीतिक दलों का गठन हुआ। विभिन्न राजनीतिक दलों के बीच परस्पर सत्ता संघर्ष का दौर भी दिखाई दिया।

देखते ही देखते राजनीति का मुख्य लक्ष्य विलोपित हो गया तथा स्वार्थसिद्धि के प्रभावशाली साधन के रूप में राजनीति का इस्तेमाल किया जाने लगा। इन तमाम विकृतियों के चलते स्वस्थ लोकतंत्र की स्वस्थ परंपरा को पुनः विकसित किए जाने की नितांत आवश्यकता है। इन संदर्भों में यह अत्यंत जरूरी है कि आम नागरिक राजनीति के प्रति अपनी अभिरुचि जागृत करें। यह जरूरी नहीं कि राजनीतिक सक्रियता ही अपेक्षित है। अपितु आशय महज इतना है कि आम नागरिक राजनीतिक दलों की नीति और नियत को लेकर अपना मत स्थापित करें। अलग-अलग दलों की अलग-अलग विचारधाराओं का अपने स्तर पर मूल्यांकन करें। सही का चयन करें और गलत को नजरअंदाज करें। इस बात का यह आशय भी है कि सही का पक्ष ले तथा गलत का विरोध ना करें तो ना करें लेकिन उसे नजरअंदाज करके चलें।

निश्चित रूप से आम नागरिकों की राजनीतिक जागृति राजनीति के शुद्धिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करेगी। दरअसल आम नागरिकों का राजनीति के प्रति अनासक्ति का भाव राजनीति के निरंतर दूषित होते रहने का प्रमुख कारण रहा है। जन जागृति द्वारा ही राजनीतिज्ञों की बेलगाम मनोवृत्ति पर प्रभावी रूप से अंकुश लगाया जा सकता है। विभिन्न राजनीतिक दल आम नागरिकों की राजनीति के प्रति अरुचि के चलते अपराध वृत्ति में लिप्त चेहरों को भी चुनावी समर में उतारते रहे हैं। विकल्प के अभाव में आम नागरिकों के सम्मुख छोटी बुराई या बड़ी बुराई इनमें से ही किसी एक का चयन करना होता है। नागरिकों की इस दुविधा के मूल कारण में उनकी राजनीति के प्रति अरुचि ही है। समाज के प्रबुद्ध एवं संभ्रांत समझे जाने वाले वर्ग के लिए राजनीति को हेय दृष्टि से देखा जाता है।

दरअसल इस स्थिति को बदलना होगा। अन्यथा लोकतंत्र में लोकतंत्र की धारणा के अनुरूप लोकतंत्र कहीं दिखाई नहीं देगा। राजनीति में धनबल और बाहुबल का वर्चस्व राजनीति के अपराधीकरण का कारण बनता रहा है। ऐसे दौर में नागरिकों द्वारा जागृत अवस्था में दिए गए जनादेश से विसंगतियों से पार पाया जा सकता है। वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में राजनीति का जो विकृत स्वरूप दिखाई देता है, उसके मूल में राजनीति के मैदान को नागरिकों द्वारा खुला छोड़ देना है। सीधे तौर पर यदि कहा जाए तो नागरिकों की राजनीति के प्रति अनासक्ति के चलते राजनीति निरंतर दूषित होती रही है। मनमानी नीति और मनमाने निर्णयों के आधार पर जोड़-तोड़ के सहारे बनती सरकारें, परस्पर विपरीत विचारधारा का सत्ता के लिए ध्रुवीकरण और वर्ग विशेष के हित साधन की रीति नीति के चलते राजनीतिक शुचिता और पवित्रता लगातार दांव पर लगती रही है।

यह सब एकाएक नहीं हुआ। दरअसल राजनीतिक दलों की गंभीर से गंभीरतम गलतियों पर भी जब नागरिकों ने विशेष संज्ञान नहीं लिया तब इन दलों के हौसले निरंतर बढ़ते ही गए। आम नागरिकों को जैसे चाहे वैसे बरगलाया जाता रहा। सब्जबाग दिखाए गए और कभी ना पूरे होने वाले वादों के सहारे चुनावी वैतरणी पार की जाती रही। आज भी यह सिलसिला बदस्तूर जारी है। दल बदले, चेहरे बदले किंतु व्यवस्था को व्यवस्थित कर देने के जमीनी प्रयास बहुत कम सार्थक सिद्ध हो पाए। परिणामस्वरूप विकृतियों के जाल का जंजाल हर दौर में देश-प्रदेश को समस्या प्रधान ही बनाता गया। ऐसे में नागरिकों की राजनीतिक चेतना ही तमाम विसंगतियों का निदान कर सकेगी।

राजेंद्र बज

व्यापार संवाद को मिला मंच, भाजपा व्यापारी प्रकोष्ठ का मिलन समारोह

व्यापारी हितों की रक्षा के लिए प्रकोष्ठ पूरी तरह सक्रिय : धीरज खंडेलवाल

बालाघाट। शहर के हरिमंगलम लॉन में भाजपा व्यापारिक प्रकोष्ठ के तत्वावधान में व्यापारी मिलन समारोह का भव्य आयोजन किया गया। समारोह में जिले भर से बड़ी संख्या में व्यापारी वर्ग, जनप्रतिनिधि और पार्टी पदाधिकारी शामिल हुए। आयोजन के दौरान आपसी संवाद, कारोबारी हितों और स्थानीय विकास से जुड़े विषयों पर विस्तृत विचार-विमर्श हुआ। समारोह का शुभारंभ भारत माता, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय के तैलचित्रों पर माल्यार्पण एवं पूजा-अर्चना के साथ किया गया। इसके पश्चात मंचस्थ अतिथियों का स्वागत सत्कार किया गया। बाद प्रकोष्ठ पदाधिकारियों ने व्यापार जगत की अपेक्षाओं व चुनौतियों पर अपने विचार रखे।



ये रहे उपस्थित - समारोह में विशेष रूप से पूर्व कैबिनेट मंत्री गौरीशंकर बिसेन, भाजपा जिलाध्यक्ष एवं पूर्व मंत्री रामकिशोर नानो कांवरे, विधायक राजकुमार करहे, विधायक गौरव पारधी और नगरपालिका अध्यक्ष भारती सुरजीतसिंह ठाकुर मंचासीन रहे। इनके साथ भाजपा व्यापारी प्रकोष्ठ के सहसंयोजक श्रेयांश वैद्य, जिला संयोजक दिलीप कारड़ा, पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष रमेश रंगलानी, सत्यनारायण अग्रवाल, ऋषभदास वैद्य, राजदादास कारडा, अभय सेठिया, अशोक बजाज, अतुल वैद्य, विशाल मंगलानी, महेंद्र सुराना, भवानी शंकर टेकड़ीवाल, संजय मिश्रा, डॉ. नरेंद्र भैरम, भाजपा जिला मीडिया सह प्रभारी जितेंद्र चौधरी, जिला मंत्री सुधीर चौधरी और नगर अध्यक्ष राकेश सेवईवार सहित अन्य वरिष्ठजन उपस्थित रहे। आशय की जानकारी भाजपा जिला मीडिया प्रभारी हेमेन्द्र क्षीरसागर ने दी।

आपसी सहयोग और संवाद मजबूत - **दिलीप कारड़ा-** प्रस्तावना उद्बोधन में भाजपा व्यापारिक प्रकोष्ठ जिला संयोजक, दिलीप कारड़ा ने समारोह के उद्देश्य और आयोजन की रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि ऐसे मिलन समारोह व्यापारियों को एक मंच पर लाकर आपसी सहयोग और संवाद को मजबूत करते हैं। साथ ही उन्होंने व्यापारिक समुदाय की समस्याओं तथा उनके समाधान के लिए प्रकोष्ठ के माध्यम से सतत समन्वय बनाए रखने का उल्लेख किया।

सक्रियता से कारोबारियों को नई ऊर्जा- धीरज खंडेलवाल- भाजपा व्यापारी प्रकोष्ठ प्रदेश संयोजक धीरज खंडेलवाल ने समारोह को संबोधित करते हुए प्रदेश स्तर पर व्यापारिक प्रकोष्ठ की कार्ययोजना और संगठनात्मक गतिविधियों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि व्यापारी हितों की रक्षा, नीतिगत विषयों पर प्रभावी संवाद और प्रकोष्ठ की सक्रियता से कारोबारियों को नई ऊर्जा मिलती है। उन्होंने सभी व्यापारियों से संगठित होकर प्रकोष्ठ के माध्यम से अपने सुझाव व विषय साझा करने का आह्वान किया।

व्यापारिक तंत्र, आर्थिक प्रगति का आधार = गौरीशंकर बिसेन- पूर्व कैबिनेट मंत्री गौरीशंकर बिसेन ने अपने वक्तव्य में जिले के समग्र विकास, बुनियादी सुविधाओं और व्यापारिक वातावरण को बेहतर बनाने से जुड़े विषयों पर मार्गदर्शन दिया। उन्होंने कहा कि मजबूत व्यापारिक तंत्र किसी भी क्षेत्र की आर्थिक प्रगति का आधार होता है और इसके लिए सभी वर्गों के बीच तालमेल आवश्यक है।

व्यापारी वर्ग समाज की रीढ़ = रामकिशोर कांवरे- भाजपा जिलाध्यक्ष एवं पूर्व मंत्री रामकिशोर कांवरे ने समारोह में अपने वक्तव्य में संगठन और व्यापारिक समुदाय के बीच निरंतर संवाद व समन्वय को और सुदृढ़ करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि व्यापारी वर्ग समाज की रीढ़ है और उनकी व्यावहारिक बातों व सुझावों को गंभीरता से सुना जाना चाहिए। उन्होंने सभी पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि वे व्यापारियों के साथ सीधा जुड़व रखें और प्रकोष्ठ की गतिविधियों को जमीनी स्तर पर प्रभावी रूप से आगे बढ़ाएं।

रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण योगदान = राजकुमार करहे- लांजी विधायक राजकुमार करहे ने अपने उद्बोधन में स्थानीय अर्थव्यवस्था और समाज के संतुलित विकास में व्यापारियों की भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि कारोबारी वर्ग रोजगार सृजन और बाजार व्यवस्था को गति देने में महत्वपूर्ण योगदान देता है। आज हर वर्ग के साथ व्यापारी वर्ग भी देश के नव निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे। जो साधुवाद के पात्र हैं।

जनहित से जुड़े कार्यों में भागीदारी = श्रेयांस शेखू वैध- भाजपा व्यापारी प्रकोष्ठ प्रदेश सह संयोजक श्रेयांस शेखू वैध ने व्यापारियों से जुड़े विषयों पर जनप्रतिनिधियों व प्रशासन के बीच बेहतर संवाद तथा सकारात्मक सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने अनुभव साझा करते हुए व्यापारियों को बदलते दौर के अनुरूप आगे बढ़ने और जनहित से जुड़े कार्यों में भागीदारी निभाने की बात कही।

डॉ मृदुल कीर्ति जी को वरिष्ठ प्रवासी भारतीय साहित्यिक सम्मान

अभ्युदय अंतरराष्ट्रीय संस्था के वार्षिकोत्सव में डॉ मृदुल कीर्ति जी (ऑस्ट्रेलिया) को अभ्युदय अंतरराष्ट्रीय वरिष्ठ प्रवासी भारतीय साहित्यिक सम्मान 2026 से नवाजा गया।

14 नवंबर को अभ्युदय मंच पर डॉ. इंदु झुनझुनवाला, डॉ. विवेक जावली, डॉ प्रेम तन्मय, गीता चौबे गूँज और प्रबुद्ध साहित्यकारों एवं पदाधिकारियों द्वारा दिया गया। आदरणीय मृदुल कीर्ति जी वेदों की भी ज्ञाता हैं और इन्हें अनेकानेक सम्मान मिल चुके हैं, जिसमें प्रमुख है देश के प्रधानमंत्री मोदी जी ने भी इन्हें सम्मान प्रदान किया है।

